# DETAIL TRANSCRIPTION

INTERVIEWEE : SEHLO DEVI

TIME AND DATE :

PLACE : PREM VIHAR, KARAWAL NAGAR, DELHI - 110094

⇒ सबसे पहले आप अपने बचपन के बारे मे बताइए।

मतलब आगरे के पास नुनहाई बोलते है, वहीं रहते थे हम, वही हमारी पैदाइश है। नुनहाई मे हमारे पांच भाई थे। एक खत्म हो गया है - 2, 2½ साल हो गए और बहन अकेली हू मैं। पिताजी हमारे मतलब मोटर Mechanic और स्कूटर पंचर का काम करते थे। मतलब सही थे। और हमारा बचपन सही गुजर गया और विवाह के बारे मे - जब हम समझदार हुए तो शादी शोया कर दिया।

⇒ तो आप पे जमीन नहीं थी?

जमीन नही थी। खेती, पेती नहीं थी। बस ऐसे ही मकान बने हुए थे। खेती नही थी बस अपना काम धन्धा था। परिवार मे चार भाई है और मै अकेली हूं। भाई भी अपने Generator का काम करते है सही सलामत। फिर हमारी शादीशुदा हो गई। फिर शादी ब्याह के बाद मे बस हमारे थोड़े बोहत

सही दिन गुज़रे। ये छपाई का काम करते थे - ये शादी, ब्याह के कार्ड छापते थे दिल्ली में।

⇒ किसके लिए ?

इधर नई सड़क की तरफ प्रैस मे। कई जगह काम भी बदला। काम बदलने के बाद - काम करते रहे फिर कई साल के बाद एक दिन आते हुए इनका accident हो गया। सीलमपुर मे रहते थे पहले। फिर उसके बाद मे, हम इधर आ गए। कोई मजबूरी मे इधर आ गए (प्रेम विहार में), भाई, भाई की लड़ाई में।

सीलम पुर की ही उनकी पैदाइश थी। पहले सीलम-पुर में रहते थे फिर उसके बाद accident हो गया, हमारा। हम आ रहे थे आगरे से। मथुरा मे - दोनो बच्चे साथ मे थे और हम साथ मे। बस और ट्रक दोनो का accident हो गया। फिर उसके बाद पुलिस ने हमाय दाखिला करा दिया - मथुरा Hospital में। फिर जा के हमें होश आया। होश आने के बाद हमसे पता पूछा। कि तुम कहां के थे ? कहां से आए हो ? फिर सारा हमने पता दिया। फिर ~~हमार~~ इधर हमारे मैके से और हमारे पीहर से छुट्टि करा के ले गए। एक साल हमने इधर ही काटा और उधर ही भाईयो ने हमारा इलाज कराया। उस टाईम तो हमारे पिताजी भी थे जो बाद मे खत्म हुए है।

फिर उसके बाद एक साल हम पीहर काट के हम दिल्ली आ गए। फिर उनसे (पति) काम नहीं हुआ। फिर ऐसे ही मजबूरी चलती रही कुछ दिन, कई साल। फिर जब यहां आए शिव विहार तो यहां आ के खत्म हो गए वो। वो खत्म हो गए तो - मैंने ये जगह काम किया - हां एक तो डाक खाने मे - पास मै, ये करावल नगर मे - Rim की Factory मे करा था - हां वही किया था। पर वहां लग गई Seal - बंद हो गई - हां। Seal लगने के बाद मे, हमने किया था प्लास्टिक की Factory में काम - जहां खिलौने बनते है। - शिव विहार की पुलिया पे। यहां कुछ दिन वहां करा। फिर उसके बाद कही मुझे काम ही नहीं मिला। अब मै घर मे इस टाईम खाली बैठी हूं।

⇒ तो वो काम आपने क्यो छोड़ दिया?

वो पैसे सही नहीं देता था - पैसे भी कम थे। 700 रुपये थे और वो भी time पे नही देता था।

⇒ और पहले वाली Factory मे कितने पैसे थे?

हां उसमे 800 रुपये थे (महीना) पर उसमें सील लग गई। फिर कोई काम नही मिला हां। दो बच्चे है - वो दोनो स्कूल जाते है। और मतलब अब मेरे पास कोई काम नही है। बोहत परेशानी है।

अब मैं घर पे इस time खाली बैठी हूँ।

अब ये दो बच्चे है अमित और सुनिल - अमित तेरवें साल मैं चल रहा है और मतलब आठवी मे आया है। और छोटे वाला सातवी मे आया है। और दोनो स्कूल जाते है 'आलोक कुंज' मे।

⇒ तो आप चाहती है कि आपके बच्चे और आगे पढ़े या कोई काम करवाना चाहती है ?

वैसे तो चाहते है कि एक, दो क्लास और आगे निकल जाए। और 33 गज का प्लाट है हमारे पे और आधा हमने किराए पर दे रखा है और आधे मे हम है। नीचे हम है और मतलब ऊपर किराएदार है। और 500 रूपए महीना हमको मिलते है। और 500 रूपये मे हम गुजर, बसर करते है।

हम जब करावल नगर ; डाकखाने के पास Factory मे काम करते थे - तो जब checking वाले आते थे तो चौकीदार बाहर से ताला लगा कर, सब लोगो को ऊपर कर देता था मालिक - और मतलब ऐसी घुटन थी - - - - - और बत्ती वत्ती तो मतलब नही थी। काम पूरा लेते थे पैसा time पर नही देते थे।

पुराने लोग है जो उनका केस भी चल रहा है।

हमे 5, 6 महीने ही हुए थे तो मतलब हमारा हिसाब कर दिया था। जो पुराने लोग है उनका तो केस अभी तक चल रहा है, मालिक पर। और मतलब बोहत परेशानी है। हमे 800 रुपये देते थे। और इस time तो हम खाली बैठे है।

⇒ अभी आप अपने बच्चो को चाहती है कि कुछ काम करे ?

अभी चाहते है कि भई रुक, दो class और निकाल ले। अभी रुक आठवीं में आया है और रुक 7 वी मे आया है।

⇒ तो आप यहां vote वगैरह डालने जाते है ?

vote डालने मतलब, एक आध ही बार गए है। सीलमपुर में चले जाते थे। इधर जब vote पड़ती थी तो मालूम नहीं देता था। इधर तो मतलब हम कम ही गए है। सीलमपुर मे हम चले जाते थे। अब कभी छुट्टि ना हो और काम पे जाना हो तो हम नहीं जाते थे। और हमे ~~मालूम~~ मालूम ना हो।

⇒ तो किसकी vote डालते थे आप ?

पहले उधर तो कमल फसल की डालते थे, सीलम-पुर मे। इधर तो हमे पता ही नहीं है। हम गए ही नहीं है। और फिर मजबूरी मे फसे रहे तो क्या वोटन, फोटन का ध्यान। हां।

जब हम आगरे से आ रहे थे, और आगरे से
आते हुए हमारा accident हो गया इधर मथुरा मे-
कोसी खाता के बीच में। फिर मतलब बोहत चोटे
आई हमारे। और दोनो बच्चे साथ मे, और
हम दोनो जने। मतलब सब बस खाली कर के
चले गए। तो बहुत चोटे आई हमारे। तो
मतलब किसी ने देखा नही हमे। ये चिल्लाते
रहे कि मेरे बच्चो को देखो। लेकिन किसी ने
देखा नही हमे। सब चले गए। फिर मतलब एक
पुलिस की जीप आई। उसमे कोई अफसर था।
तो मतलब उसने उसने हमे उतारा और हमें
मथुरा हस्पताल मे भर्ती कराया। मैं बेहोश
थी। फिर दाखले कराने बाद हमे होश आया।
फिर मुझसे और मेरे घरवालो से पूछा कि तुम
कहाँ के थे?, कहाँ जा रहे थे और फिर
हमने अपने पीहर का, आगरे का - नुनहाई का
address दिया। फिर दो बजे घर पे हमारे पुलिस
पहुँची - आगरे हमारे घर पे कहने। फिर पिताजी,
ताऊ, भाई, मामी मतलब सब मथुरा आ
गए। आने के बाद मे हमे सवेरे छुट्टि करा के

फिर उसके बाद हमने कुछ दिन केस चलाया।
फिर केस चलाने के बाद मे, वो केस हमने जिस
वकील को दे रखा था वो खतम हो गया। वो

फिर उसके बाद हमने कुछ दिन केस चलाया।
फिर केस चलाने के बाद मे, वो केस हमने जिस वकील को दे रखा था वो खतम हो गया। वो वकील खतम हो गया तो, जब हमे पता लगा तो हमने उससे कागज लेके, हमने दूसरा वकील किया। दूसरा वकील किया तो अब भी हमे मतलब वो ही आस है और मतलब कोई सहारा नही है। एक पैसा, दो पैसा आ जाए। तो कोई काम आए। तो वो अभी Final नही हुआ।
अभी वो केस चल रहा है जिसमे हमने दूसरा वकील किया है। वो मिलने की कोई सम्भावना होए तो बड़ी अच्छी बात है। सहारा होए। और बच्चे अभी छोटे-छोटे है।